कोरनेई चुकोव्स्की

सूरज की चोरी

कोरनेई चुकोव्स्की

सूरज की चोरी

चित्रकार : यू० वास्नेत्सोव

प्रगति प्रकाशन
मास्को

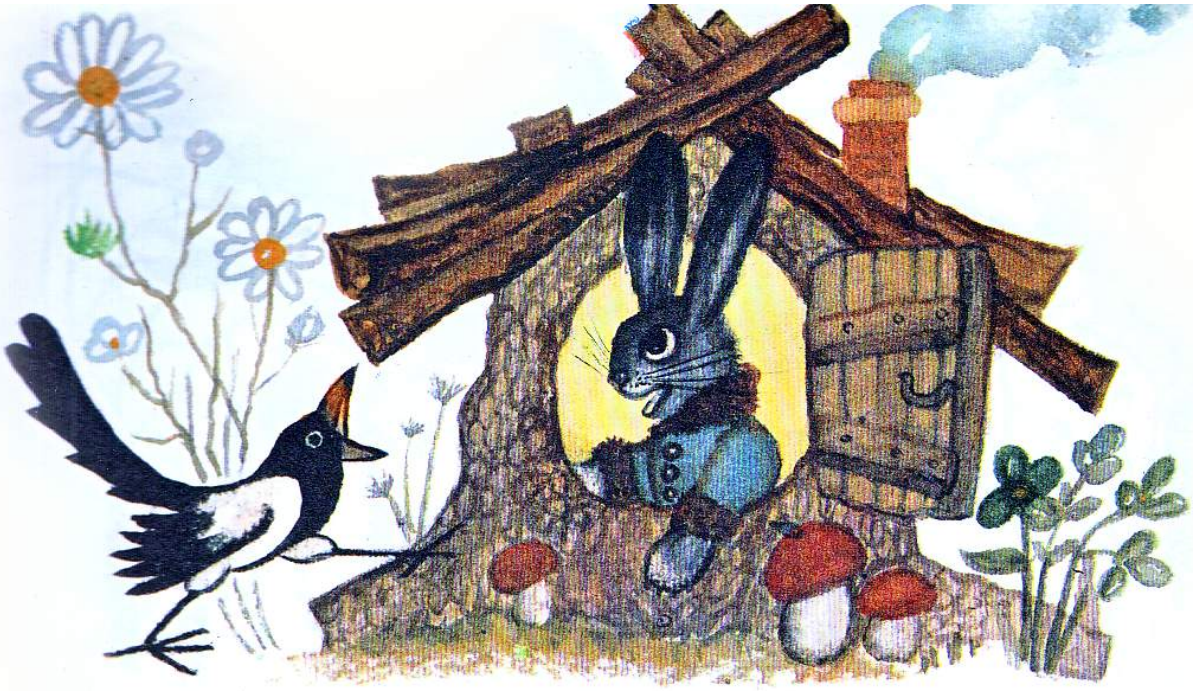

सूरज नभ में तैर रहा था
बादल ने आ ढांप लिया।
खिड़की से झांका खरहे ने
अन्धकार ने डरा दिया।।

चिड़ियां काली, चिड़ियां काली।
पर वे उजले पंखों वाली।।
वे खेतों में जा चिल्लाईं।
"सारस, सारस, राम दुहाई।
मगरमच्छ ने ग़ज़ब किया
वह सूरज को निगल गया!"

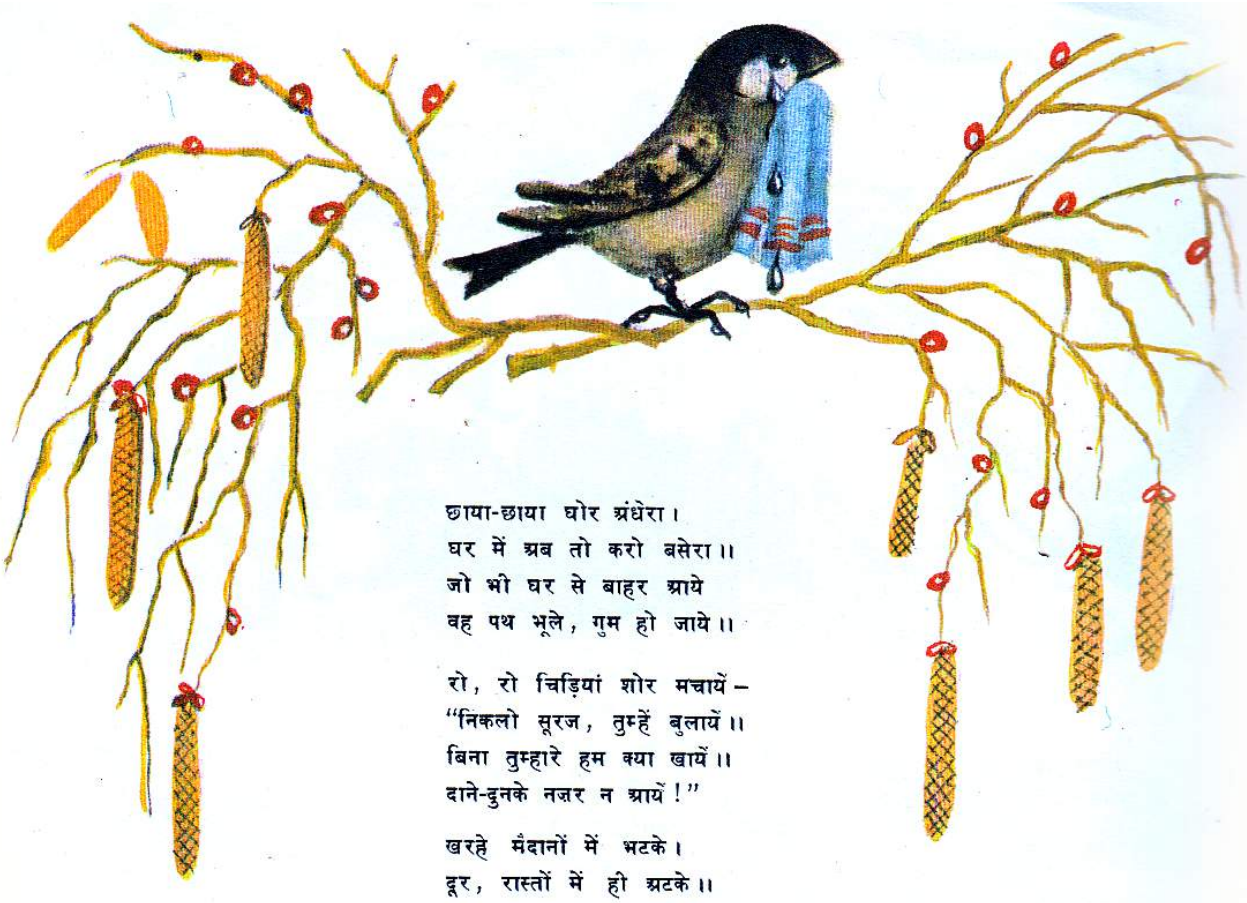

छाया-छाया घोर अंधेरा।
घर में अब तो करो बसेरा।।
जो भी घर से बाहर आये
वह पथ भूले, गुम हो जाये।।

रो, रो चिड़ियां शोर मचायें –
"निकलो सूरज, तुम्हें बुलायें।।
बिना तुम्हारे हम क्या खायें।।
दाने-दुनके नजर न आयें!"

खरहे मैदानों में भटके।
दूर, रास्तों में ही अटके।।

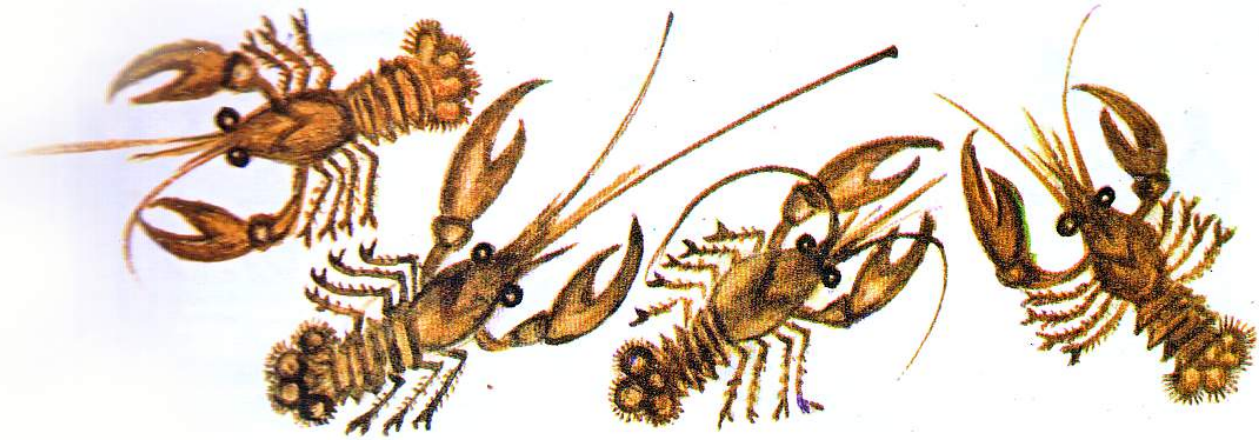

केवल फूली आंखों वाले।
झींगे नाचें हो मतवाले।।
पर्वत के पीछे गड्ढे में।
दीवानी-सी गूंज रही थी,
हूक भेड़ियों की खड्डों में।।

सुबह-सुबह दो भेड़ें आईं
दोनों ने यह टेर लगाई –
"निकल जानवर, बाहर आओ।
मगरमच्छ से तुम भिड़ जाओ।।
सूरज फिर से नभ में आये।
मगरमच्छ से वह बच जाये!"

पर उनका तो दम निकले –
"उस से कौन मोर्चा ले।।
बड़ा भयानक, दांत बड़े।
उस से कैसे, कौन लड़े।।"

तब वे भागे-भागे आये
भालू के घर जा चिल्लाये –
"अरे निकल अब बाहर आओ।
तुम सूरज की जान बचाओ।।
चूस चुके पंजा, अब छोड़ो,
अरे आलसी, तन्द्रा तोड़ो!"

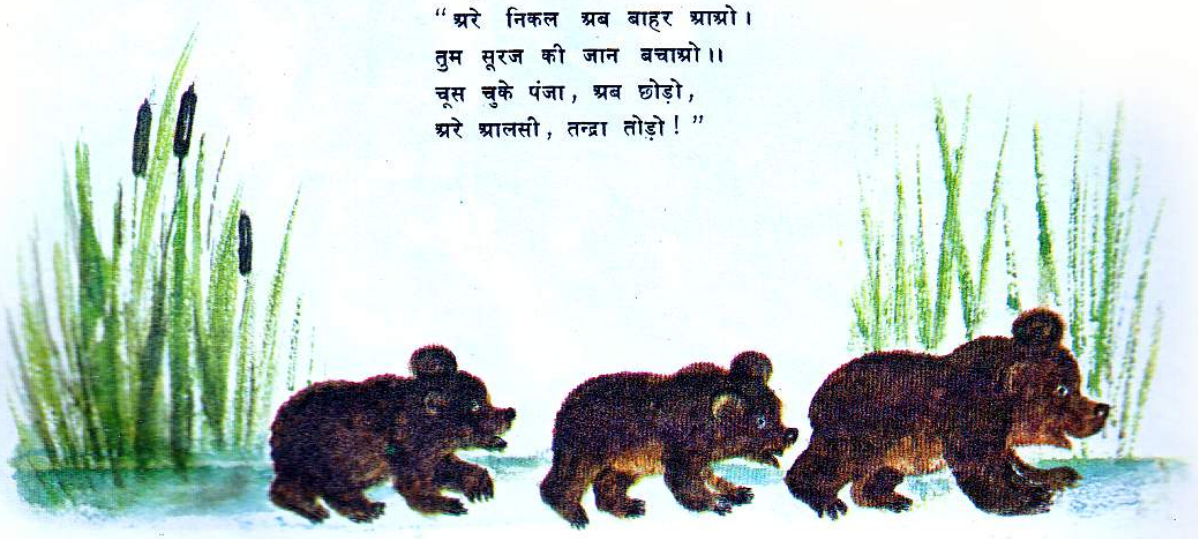

किन्तु न भालू लड़ना चाहे।
दलदल में यों आये-जाये।।
वह रोये, औ' वह चिल्लाये।
बच्चों को वह पास बुलाये।।

"कहां जा मरे, रे तुम सारे?
बूढ़ा ढूंढ़े, तुम्हें पुकारे।।"

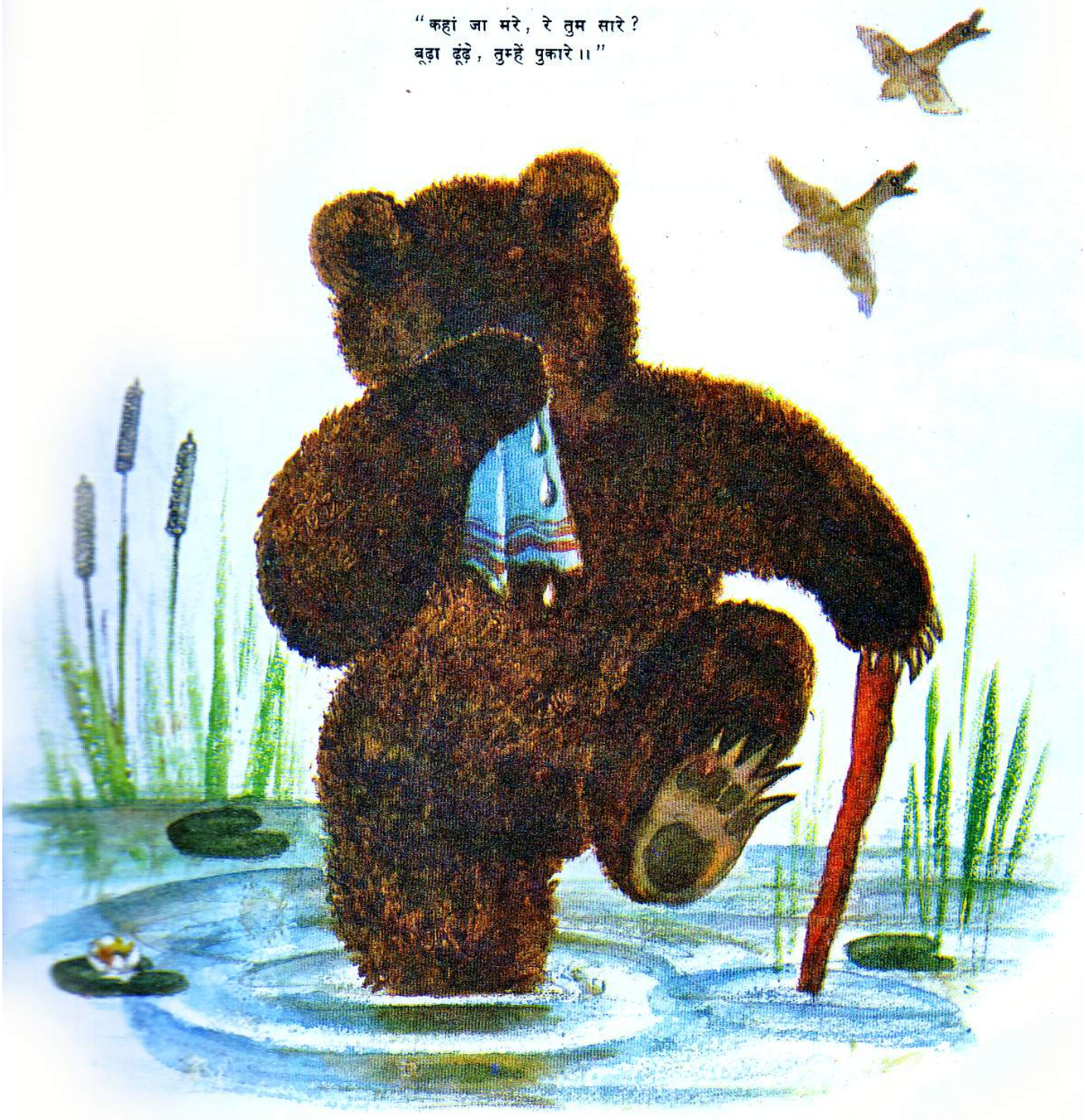

मादा भी हैरान फिर रही।
बच्चों की वह खोज कर रही।।
"कहां गये तुम, कहां गये रे?
या खाई के बीच जा गिरे?
या पागल कुत्तों ने आकर
चीरा तुम्हें अन्धेरा पाकर?"

भटकी वह जंगल में दिन भर।
मिले न बच्चे उसे कहीं पर।।
वृक्षों से काले उल्लू बस।
उसे देखते जाते बरबस।।

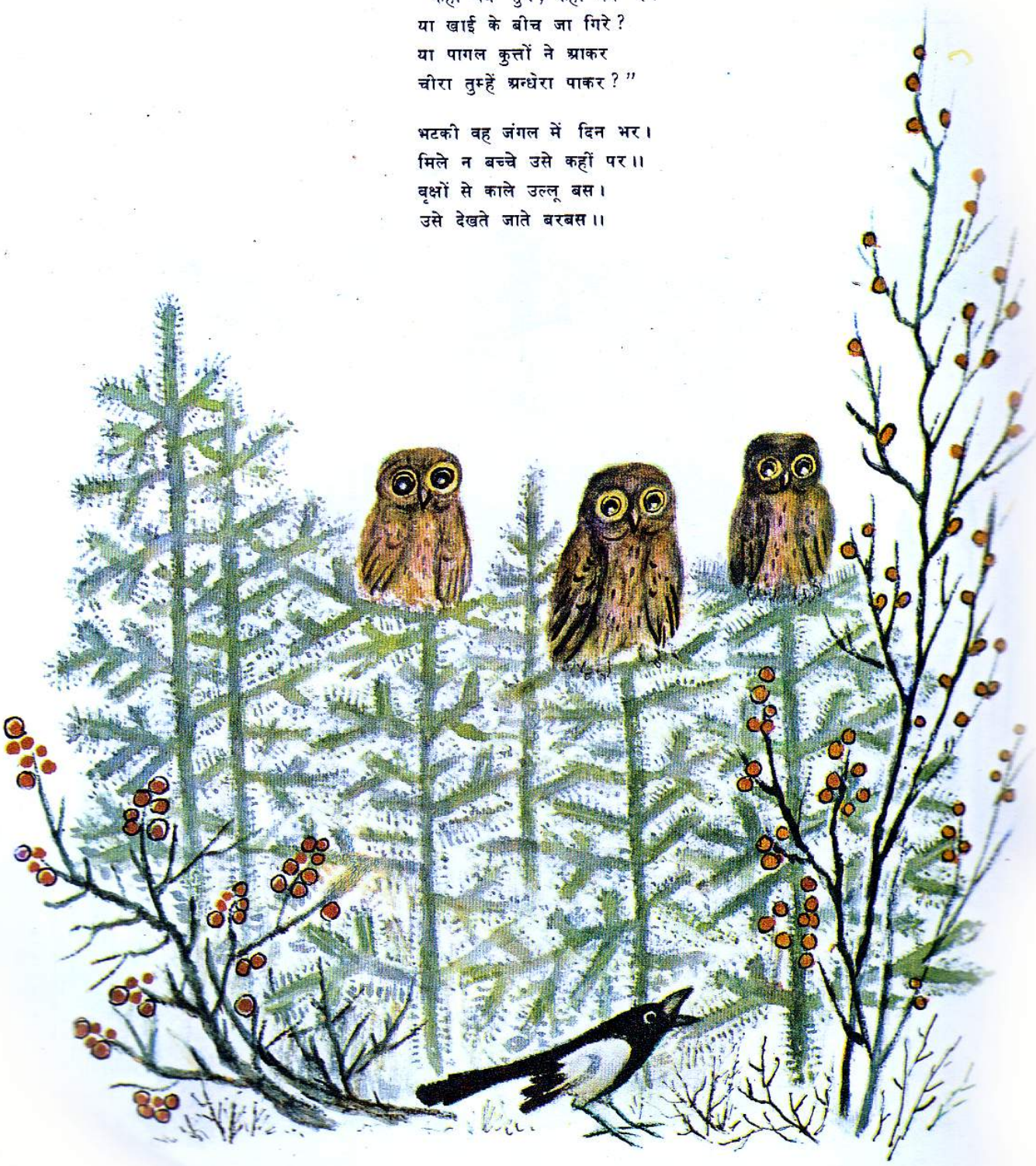

इधर एक खरहे ने आकर।
भालू से यह कहा सुनाकर।।

"शर्म करो, तुम भी रोते हो।
खरहा नहीं, रीछ होते हो।।
टेढ़ी टांगों वाले जाकर
मगरमच्छ को मजा चखाकर
टुकड़े उसके तुम कर डालो।
उसके मुंह से सूर्य निकालो।।
आसमान में वह फिर जाकर।
चमक उठेगा ज्योति जलाकर।।

बच्चे तेरे तब झबरीले।
मोटे पंजे वाले, ढीले।
ख़ुद ही घर भागे आयेंगे।
नमस्कार सब चिल्लायेंगे।।"

भालू तब हुंकारा।
ग़ुस्से से फुंकारा।।
बड़ी नदी की ओर क्रोध से
भागा बन अंगारा।।

पहुंचा जब वह बड़ी नदी पर।
देखा वहां अजब ही चक्कर।।
मगरमच्छ डोले लहरों पर।
मुंह में आग नहीं, सूरज भर।।
लाल-लाल था, सुन्दर काया।
मगरमच्छ ने जिसे चुराया।।

दबे पांव भालू ने आकर।
सिर पर हल्की चोट लगाकर।।
कहा उसे–"सुन रे शैतान।
दे सूरज, यदि प्यारी जान।।
वरना देख, पकड़ मैं लूंगा।
तेरे टुकड़े मैं कर दूंगा।।
फूहड़ होगी अक़्ल ठिकाने

सूर्य चुराने के क्या माने!
घिरा अन्धेरा, खोई राह।
तुझ को नहीं तनिक परवाह!"

मगर बेहया हंसा ठठाकर।
पेड़ हिले सब ही थर्राकर।।
"केवल यदि इतना चाहूं।
हड़प चांद को भी जाऊं!"

गुस्से में भालू आया।
वह हुंकारा, चिल्लाया।।
झपट पड़ा वह दुश्मन पर।
वार किये उसने तन कर।।
कड़ी पिटाई उसकी की।
याद दिलाई नानी की।।
"लाओ, तो सूरज लाओ
झटपट उसको लौटाओ!"

दिल मगरमच्छ का कांपा।
उसने हालत को भांपा।।
वह रोया, औ' चिल्लाया।
आंखों से नीर बहाया।।
सूरज तब निकला मुंह से।
औ' बड़े-बड़े दांतों से।।
वह चला गगन में बढ़ता।
वह ऊंचा-ऊंचा चढ़ता।।

वह उठा झाड़ियों पर से।
वह बर्चों के ऊपर से।।

ए स्वर्णिम सूरज नमस्कार !
नीले नभ, तुझ को नमस्कार !

पक्षी सब चहके मिलकर।
नीड़ों से चले निकल कर।।
खरहों ने खुशी मनाई।
कूदे औ' दौड़ लगाई।।

भालू के बच्चे देखो।
भागे जाते हैं कैसे,
बिल्ली के बच्चों जैसे।।
वे मोटे पंजों वाले।
सब खुश होकर मतवाले।।
"दादा, हम सब घर आये।
लो नमस्कार!" चिल्लाये।।

खुश गिलहरियां, खरहे खुश हैं।
खुश बालायें, लड़के खुश हैं।।
भालू को सब चूम रहे हैं।
सभी मचा यह धूम रहे हैं।।
"धन्यवाद है दादा तेरा।
तुम सूरज को वापस लाये
दूर भगाया घोर अंधेरा।।"

अनुवादक : मदन लाल "मधु"

КОРНЕЙ ЧУКОВСКИЙ

КРАДЕНОЕ СОЛНЦЕ

На языке хинди